9. झाँसी की रानी की समाधि पर (सुभद्राकुमारी चौहान)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई. में उत्तर प्रदेश राज्य के इलाहाबाद जनपद के निहालपुर नामक ग्राम में हुआ था।

2. सुभद्राकुमारी चौहान के पिता जी का क्या नाम था?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान के पिता जी का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था।

3. सुभद्राकुमारी चौहान की प्रारंभिक शिक्षा कहाँ पर हुई?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान की प्रारंभिक शिक्षा क्रॉस्थवेट गर्ल्स कालेज में हुई।

4. सुभद्राकुमारी चौहान का विवाह किस आयु में किसके साथ हुआ था?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान का विवाह पंद्रह वर्ष की आयु में मध्य प्रदेश के खंडवा नामक स्थान के निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ हुआ था।

5. सुभद्राकुमारी चौहान किसकी प्रेरणा से देश-सेवा करने के लिए तत्पर हुईं?

उ०– सुभद्रा कुमारी चौहान गाँधी जी की प्रेरणा से देश-सेवा करने के लिए तत्पर हुईं।

6. सुभद्राकुमारी चौहान ने किसके प्रोत्साहनके फलस्वरूप काव्य रचना प्रारंभ की?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान ने माखनलाल चतुर्वेदी जी के प्रोत्साहन के फलस्वरूप काव्य रचना प्रारंभ की।

7. सुभद्राकुमारी चौहान के काव्यों में किस रस की प्रधानता है?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान के काव्यों में वीर एवं वात्सल्य रस की प्रधानता है।

8. सुभद्राकुमारी चौहान की तीन कृतियों के नाम लिखिए।

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान की तीन कृतियाँ हैं— मुकुल, त्रिधारा एवं बिखरे मोती।

9. सुभद्राकुमारी चौहान की मृत्यु कब और कैसे हुई?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान की मृत्यु सन् 1948 ई. में एक मोटर दुर्घटना में हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवयित्री को झाँसी की रानी की समाधि क्यों प्रिय है?

उ०– कवयित्री को झाँसी की रानी की समाधि इसलिए प्रिय है क्योंकि यहाँ स्वतंत्रता प्राप्ति की आशा चिंगारी रखी गई है, जो आग के रूप में फैलकर पराधीनता से मुक्त होने के लिए देशवासियों को सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

2. 'कवियों की अमर गिरा' से क्या तात्पर्य है?

उ०– 'कवियों की अमर गिरा' से तात्पर्य है कि कवियों ने अपने काव्यों में अपनी वाणी के द्वारा रानी लक्ष्मीबाई की समाधि की कभी न समाप्त होने वाली कहानी गाई है, क्योंकि रानी की समाधि के प्रति उनमें श्रद्धाभाव है, पर अन्य समाधियाँ जो इस समाधि से अधिक सुंदर हैं, ऐसी नहीं हैं। अर्थात् इस समाधि की कहानी को वीरों की वाणी बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ गाती है क्योंकि यह समाधि अन्य समाधियों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण और पूज्य है।

3. प्रस्तुत कविता में 'भग्न विजयमाला' कहकर किसे इंगित किया गया है?

उ०– प्रस्तुत कविता में 'भग्न विजयमाला' कहकर रानी लक्ष्मीबाई को इंगित किया गया है। क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई युद्धभूमि में अंग्रेजों के साथ वीरता से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई थी।

4. प्रस्तुत कविता का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।

उ०– प्रस्तुत कविता में कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि का वर्णन करते हुए रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान की गौरवगाथा पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी है। कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आशा की चिंगारी कहा है, जहाँ रानी की अस्थियाँ रखी गई हैं। रानी यहाँ स्वयं का बलिदान देकर दूसरे व्यक्तियों के लिए आदर्श बन गई है। यह छोटी-सी समाधि उसके महान् त्याग और देशभक्ति की निशानी है। जिससे सभी व्यक्ति प्रेरणा प्राप्त करते हैं क्योंकि वीर का मान युद्धक्षेत्र में बलि होने से बढ़ जाता है। कवियों ने अपनी वाणी में इस वीरांगना की कहानी गाई है। हमने बुंदेलों और हरबोलों के मुँह से रानी की वीरता की कहानी सुनी है। इस कविता के द्वारा कवयित्री देशवासियों के मन में देशप्रेम पर प्राण न्योछावर करने की भावना जाग्रत करने का प्रयत्न कर रही है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. सुभद्राकुमारी चौहान का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक व काव्यगत सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान को स्वतंत्रता-संग्राम की सक्रिय सेनानी, राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका तथा वीर रस की एकमात्र हिंदी कवयित्री कहा जाता है। इनकी कविताओं में सच्ची वीरांगना का ओज एवं शौर्य प्रकट होता है। सुभद्रा जी एकमात्र ऐसी कवयित्री हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय युवा वर्ग को युग-युग की अकर्मण्य उदासी को त्यागकर स्वतंत्रता संग्राम में स्वयं को पूर्णत: समर्पित कर देने के लिए प्रेरित किया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने सुभद्राकुमारी चौहान एवं उनके काव्य की प्रशंसा में लिखा है, ''आधुनिक कालीन कवयित्रियों में सुभद्रा जी का प्रमुख स्थान है। उनकी 'झाँसी की रानी' शीर्षक कविता सर्वाधिक लोकप्रिय है और उसे जो प्रसिद्धि प्राप्त हुई, वह अनेक बड़े-बड़े महाकाव्यों को भी प्राप्त न हो सकी।''

जीवन परिचय– राष्ट्र-प्रेमी सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जनपद के निहालपुर नामक ग्राम में सन् 1904 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज में हुई। इनकी बचपन से ही हिंदी काव्य में अत्यधिक रुचि थी। मात्र पंद्रह वर्ष की आयु में इनका विवाह मध्य प्रदेश के खंडक नामक स्थान के निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ संपन्न हुआ। विवाह के पश्चात् इनका जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हो गया। विवाह के पश्चात् गाँधी जी के संपर्क में आने पर ये उनके विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुईं और इन्होंने अपने अध्ययन कार्य को भी त्याग दिया तथा देश-सेवा के लिए तत्पर हो गईं। इसके पश्चात् इन्होंनें अनेक राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया और इसी कारण इन्हें अनेक बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी। उसी समय सुभद्रा जी की भेंट पं. माखनलाल चतुर्वेदी से हुई। चतुर्वेदी जी के प्रोत्साहन के फलस्वरूप इन्होंने काव्य रचना प्रारंभ की। देशभक्ति भाव से युक्त इनकी कविताएँ सहज ही प्रत्येक व्यक्ति को ओजस्विता से युक्त कर देती थीं। सुभद्रा जी की 'झाँसी की रानी' और 'वीरों का कैसा हो वसंत' शीर्षक कविताएँ आज भी लाखों युवकों के हृदय में वीरता की ज्वाला उत्पन्न कर देती हैं। इसी कारण इन्हें 'राष्ट्र चेतना की अमर गायिका' भी कहा जाता है। सन् 1948 ई. में एक मोटर-दुर्घटना में सुभद्रा जी की असामयिक मृत्यु हो गई।

साहित्यिक एवं काव्यगत सौंदर्य– राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित काव्य के सृजन के साथ ही सुभद्रा जी ने वात्सल्य भाव पर आधारित कविताओं की भी रचना की। इन कविताओं में सुभद्रा जी का नारी-सुलभ मातृ-भाव दर्शनीय है। इनकी राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित कविताओं में देशभक्ति, अपूर्व साहस तथा आत्मोसर्ग की भावना चित्रित होती है। इनके द्वारा रचित कविताओं के माध्यम से ऐसा प्रतीत होता है, कि इन्हें जेल-जीवन की संपूर्ण यातनाओं को हँसते-खेलते, सुखपूर्वक सहन करने में आनंद प्राप्त होता था।

2. सुभद्राकुमारी चौहान की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– कृतियाँ– सुभद्राकुमारी जी ने हिंदी साहित्य में लेखन का कार्य कवयित्री के रूप में प्रारंभ किया, किंतु इन्होंने अपने प्रौढ़ गद्य-लेखन द्वारा हिंदी भाषा को सजाने-सँवारने तथा अर्थ-गाम्भीर्य प्रदान करने में जो प्रयत्न किया है, वह भी प्रशंसनीय है। सुभद्रा जी द्वारा रचित प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(अ) काव्य-संग्रह– मुकुल, त्रिधारा

(ब) कहानी-संग्रह– सीधे-सादे चित्र, बिखरे मोती, उन्मादिनी आदि

सुभद्रा जी को 'मुकुल' काव्य-संग्रह एवं 'बिखरे मोती' कहानी-संग्रह पर 'सेकसरिया पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

भाषागत विशेषताएँ– सुभद्राकुमारी जी ने अपनी रचनाओं में मुख्य रूप से शुद्ध, साहित्यिक खड़ीबोली भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने विषय के अनुसार अनेक स्थानों पर तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया है तथा कुछ स्थानों पर मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया गया है। इनकी रचनाओं में किसी भी वाक्य में अस्पष्टता के दर्शन नहीं होते हैं। इनकी रचना-शैली में ओज, प्रसाद और माधुर्य भाव से युक्त गुणों का समन्वित रूप देखने को मिलता है। राष्ट्रीयता पर आधारित इनकी कविताओं में सजीव एवं ओजपूर्ण संगीतात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। सुभद्रा जी की रचनाएँ उनके द्वारा विषय के अनुरूप भाषा एवं शैली का प्रयोग करने के कारण ही पाठकों पर प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम रही हैं। इन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में मुख्यत: वीर एवं वात्सल्य रस का प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं में अलंकारों का प्रयोग बहुत कम देखने को मिलता है। छंद के रूप में सुभद्रा जी ने तुकांत मुक्त-छंदों का प्रयोग किया है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्तिभाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) यहीं कहीं पर ..... स्मृतिशाला-सी।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'सुभद्राकुमारी चौहान' द्वारा रचित 'त्रिधारा' काव्य संग्रह से 'झाँसी की रानी की समाधि पर' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का वर्णन करते हुए भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी है।

व्याख्या– कवयित्री कहती हैं कि समाधि के आस-पास ही रानी लक्ष्मीबाई टूटी हुई विजयमाला के समान बिखर गई थी। युद्धभूमि में अंग्रेजी सेना के साथ बहादुर से लड़ते हुए रानी के शरीर के अंग यहीं-कहीं बिखर गए थे। इस समाधि में वीरांगना लक्ष्मीबाई की अस्थियाँ एकत्र कर रख दी गई हैं, जिससे कि देश की भावी पीढ़ी उनके गौरवपूर्ण त्याग-बलिदान से प्रेरणा ले सकें।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की वीरता एवं बलिदान की गाथा का ओजपूर्ण वर्णन किया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** गीति **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज एवं प्रसाद **6. अलंकार–** उपमा, श्लेष एवं अनुप्रास **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(ब) इससे भी सुंदर ..... जंतु ही गाते।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को अन्य समाधियों से अधिक महत्वपूर्ण माना है।

व्याख्या– कवयित्री कहती हैं कि संसार में रानी लक्ष्मीबाई की समाधि से भी सुंदर अनेक समाधियाँ बनी हुई हैं, परंतु उनका महत्व इस समाधि से कम ही है। उन समाधियों पर रात्रि में गीदड़, झींगुर, छिपकली आदि क्षुद्र जंतु गाते रहते हैं अर्थात् वे समाधियाँ अत्यंत उपेक्षित हैं, जिन पर तुच्छ जंतु निवास करते हैं अर्थात् रानी लक्ष्मीबाई की समाधि अन्य सभी समाधियों से श्रेष्ठ है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए अपनी श्रद्धांजलि के भाव प्रकट किए हैं। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** गीति एवं ओजपूर्ण **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज एवं प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(स) पर कवियों की ..... वीरों की बानी।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई को श्रद्धांजलि देते हुए कहा है कि रानी की गौरवगाथा की कहानी अनेक कवियों ने अपनी वाणी में गाई है।

व्याख्या– सुभद्राकुमारी चौहान रानी की वीरता तथा यशगाथा का वर्णन करते हुए कहती है कि कवियों की अमर वाणी में रानी लक्ष्मीबाई की समाधि की कभी न समाप्त होने वाली कहानी गाई जाती है; क्योंकि रानी की समाधि के प्रति उनमें अपार श्रद्धाभाव है पर अन्य समाधियाँ ऐसी नहीं हैं। इस समाधि की कहानी को वीरों की वाणी बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ गाती है। अत: यह समाधि अन्य समाधियों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण और पूज्य है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को अन्य सभी समाधियों में महत्वपूर्ण माना है। कवयित्री ने इस कविता के माध्यम से तत्कालीन समाज में स्वतंत्रता के लिए जागृति उत्पन्न करने का प्रयास किया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** गीति एवं ओजपूर्ण **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज एवं प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास **7. छंद–** तुकांत मुक्त।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) जल कर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान को स्पष्ट करते हुए कहा है कि रानी ने देशप्रेम के लिए स्वयं का बलिदान देकर इसी समाधि के स्थान पर स्वतंत्रता की आरती उतारी थी अर्थात् रानी ने स्वयं का बलिदान देकर स्वतंत्रता संग्राम को तेज कर दिया था।

(ब) अंतिम लीलास्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की।

भाव स्पष्टीकरण– कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि के प्रति अपने भाव स्पष्ट करते हुए इस समाधि को पूजनीय व अद्‌भुत बताया है। जो रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना की अंतिम कर्मस्थली है अर्थात् इस समाधि के स्थान पर ही रानी अंतिम बार पुरुषों के समान अंग्रेजों से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुई थी।

(स) यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिनगारी।

भाव स्पष्टीकरण– सुभद्राकुमारी चौहान यहाँ स्पष्ट करती हैं कि समाधि के स्थान पर रानी की अस्थियाँ (राख) रखी गई हैं। ये अस्थियाँ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए एक चिंगारी के समान हैं, जो आग के रूप में फैलकर पराधीनता से मुक्त होने के लिए देशवासियों को सदैव प्रेरणा देती रहेंगी अर्थात् रानी की समाधि को देखकर हमें पराधीनता से मुक्त होने की प्रेरणा मिलती है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म कहाँ हुआ था?

(अ) निहालगढ़ (ब) **निहालपुर**

(स) खंडवा (द) मेरठ

2. सुभद्राकुमारी चौहान के पति का क्या नाम था?

(अ) रामसिंह चौहान (ब) माखन सिंह चौहान

(स) **लक्ष्मण सिंह चौहान** (द) शिव सिंह चौहान

3. सुभद्राकुमारी की कृति है–

(अ) प्रथम आयाम (ब) **त्रिधारा**

(स) साकेत (द) चिदंबरा

4. सुभद्राकुमारी की रचनाओं में किस रस की प्रधानता है?

(अ) **वीर रस** (ब) शोक रस

(स) हास्य रस (द) इनमें से कोई नहीं

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार निरूपण कीजिए–

(अ) उसके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृतिशाला-सी।

उ०– यहाँ श्लेष एवं उपमा अलंकार है।

(ब) यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।

उ०– यहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(स) आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।

उ०– यहाँ उपमा एवं दृष्टांत अलंकार है।

2. निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) सहे वार पर वार अंत तक, लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला-सी।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य–1. यहाँ लक्ष्मीबाई की वीरता का यशोगान किया गया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–**गीति **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश व उपमा **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(ब) बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की, भस्मा यथा सोने से।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. कवयित्री ने युद्ध में बलिदान देने वाली रानी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं तथा उसके बलिदान को अमूल्य बताया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** आख्यानक गीति **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** दृष्टांत, पुनरुक्तिप्रकाश **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(स) रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिनगारी।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. कवयित्री ने लक्ष्मीबाई की समाधि से स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रेरणा लेने के लिए युवकों का आह्वान किया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** आख्यानक गीति **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** रूपक एवं अनुप्रास **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।